विज्ञान और जैन दर्शन पर आधारित अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन के लिए संदेश

अर्हम्

11 मार्च 2021

दार्शनिक जगत का एक महत्त्वपूर्ण सिद्धांत है–आत्मवाद। आध्यात्मिक साधना का महल इस आत्मवाद के सिद्धांत पर मुख्यतया आधारित है। जैन दर्शन में आत्मा को शाश्वत तत्त्व माना गया है और आत्मा वह तत्त्व है जिसका लक्षण है–चैतन्य। हमारे जीवन में आत्मा और शरीर इन दोनों तत्त्वों का योग है। आत्मा स्थायी तत्त्व है और शरीर अस्थायी तत्त्व है। आत्मा के साथ चेतना की बात जुड़ी हुई है। अध्यात्म जगत का मान्य सिद्धांत आत्मतत्त्ववाद और चैतन्य है। इस विषय में विज्ञान का क्या अभिमत है? यह भी एक ज्ञातव्य विषय हो सकता है।

ज्ञात हुआ कि FLORIDA INTERNATIONAL UNIVERCITY & JAIN EDUCATION And RESEARCH FOUNDATION द्वारा Consciousness In Modern Science And Jain Philosophy पर 2nd International Conference आयोजित की जा रही है। यह कॉन्फ्रेंस चेतना के संदर्भ में ठोस जानकारी देने वाली सिद्ध हो और ये दोनों संस्थान अध्यात्म के जगत में प्रतिष्ठित सिद्धांत आत्मवाद जैसे तत्त्वों पर दुनियां को ठोस जानकारियां प्रदान करने का प्रयास करती रहें। मंगलकामना।

छत्तीसगढ़

आचार्य महाश्रमण

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा

प्रधान कार्यालय–3,पोर्चुगीज चर्च स्ट्रीट, कोलकाता–700 001 दूरभाष : (033) 2235 7956 2234 3598 फैक्स : 2234 3666

शिविर कार्यालय संपर्क सूत्र – 07044448888 Email - office@terapanth.com